बड़ा भेड़िया

नन्हा भेड़िया

बड़ा भेड़िया

नन्हा भेड़िया

हिंदी : मीनू नेगी रौथाण

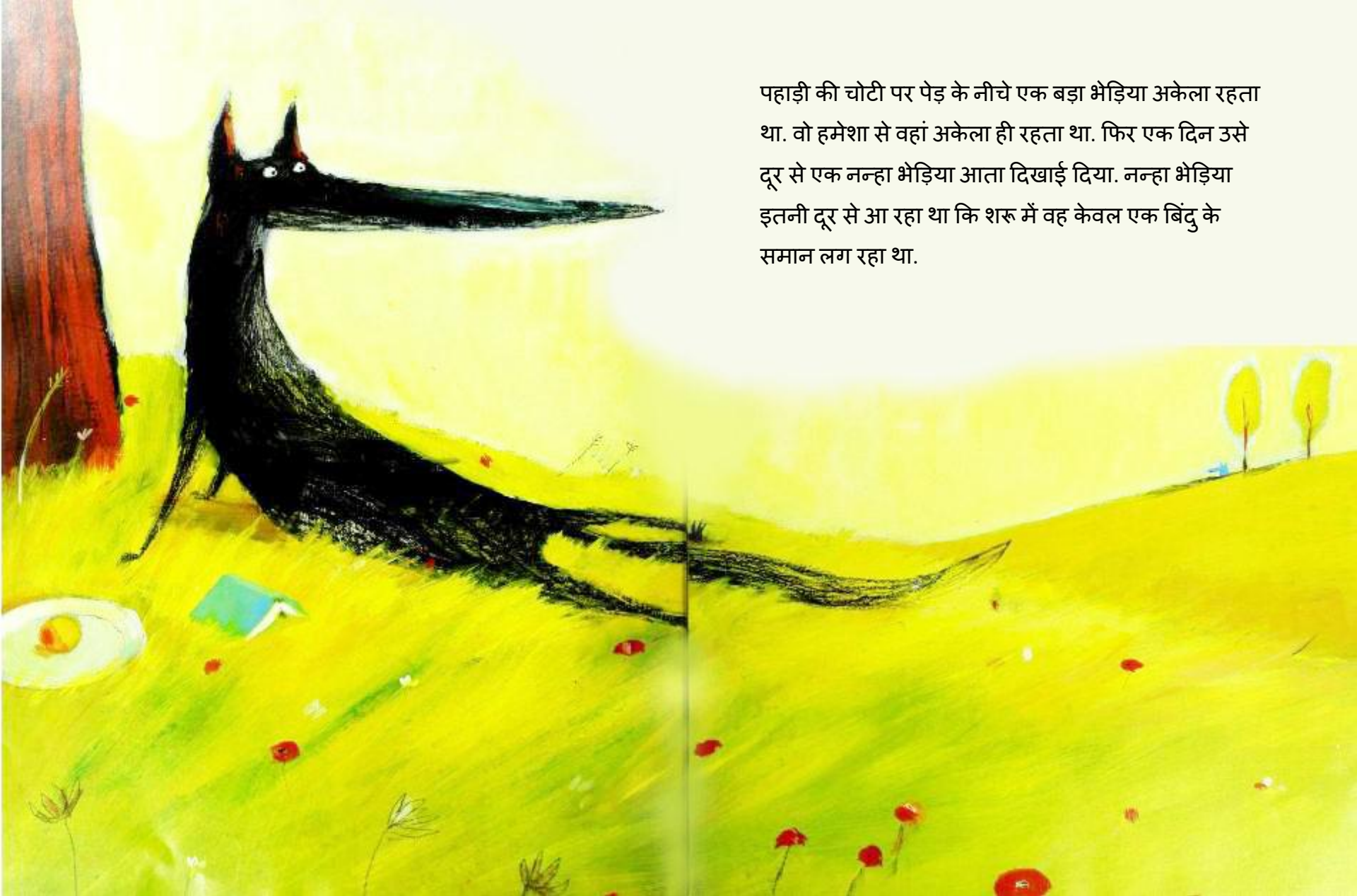

पहाड़ी की चोटी पर पेड़ के नीचे एक बड़ा भेड़िया अकेला रहता था. वो हमेशा से वहां अकेला ही रहता था. फिर एक दिन उसे दूर से एक नन्हा भेड़िया आता दिखाई दिया. नन्हा भेड़िया इतनी दूर से आ रहा था कि शरू में वह केवल एक बिंदु के समान लग रहा था.

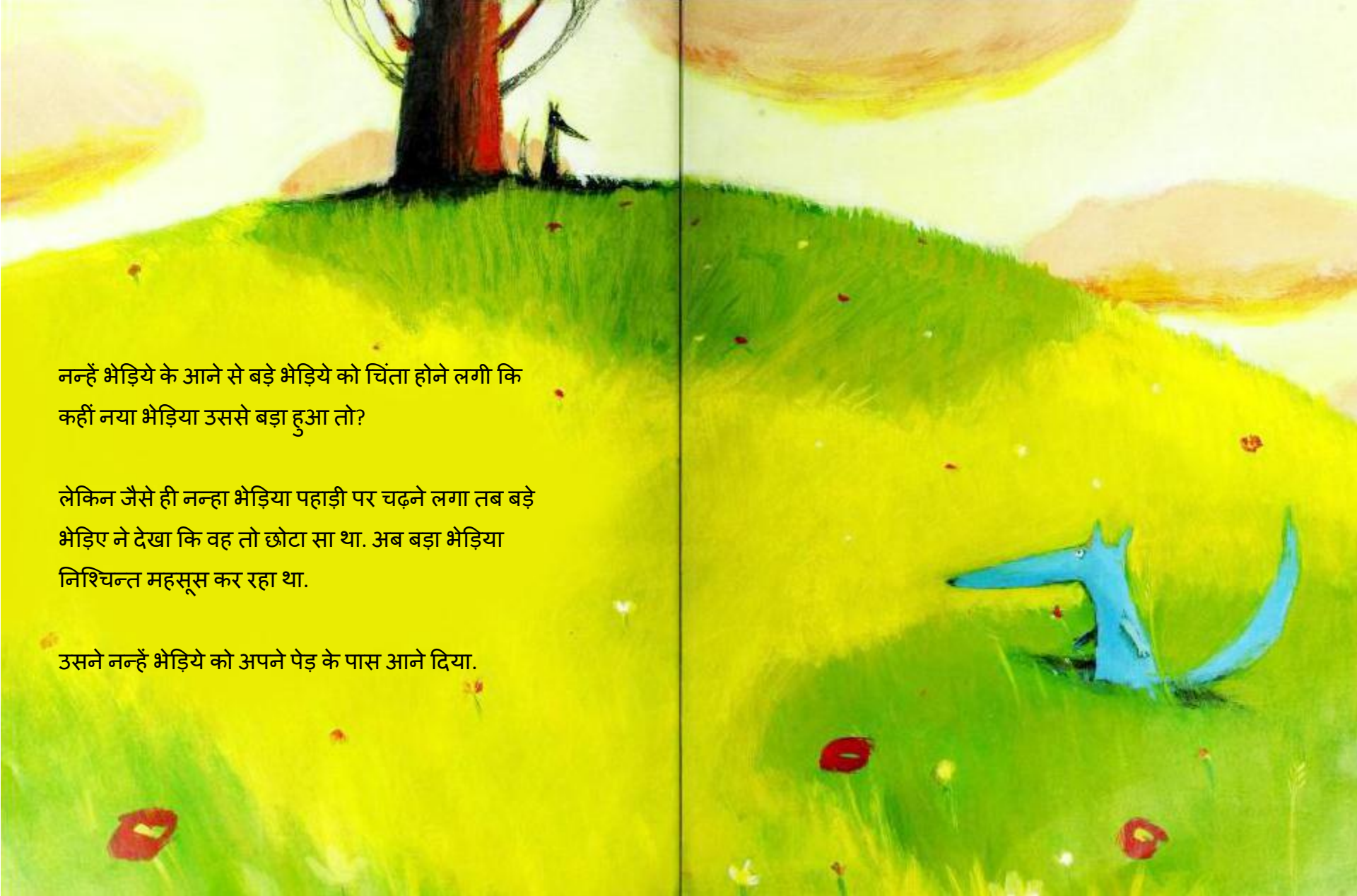

नन्हें भेड़िये के आने से बड़े भेड़िये को चिंता होने लगी कि कहीं नया भेड़िया उससे बड़ा हुआ तो?

लेकिन जैसे ही नन्हा भेड़िया पहाड़ी पर चढ़ने लगा तब बड़े भेड़िए ने देखा कि वह तो छोटा सा था. अब बड़ा भेड़िया निश्चिन्त महसूस कर रहा था.

उसने नन्हें भेड़िये को अपने पेड़ के पास आने दिया.

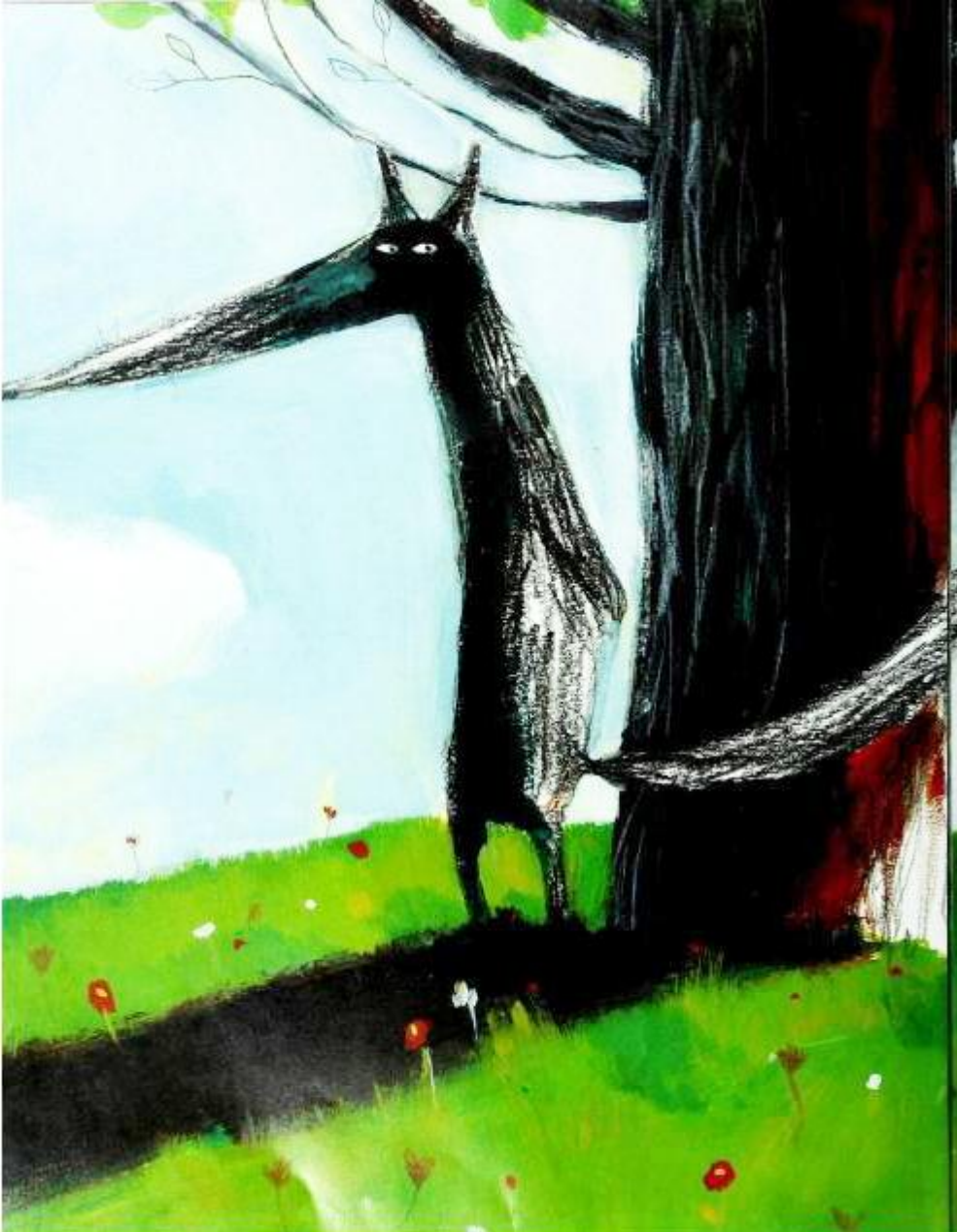

नन्हा भेड़िया पूरे दिन पहाड़ी की चोटी के पेड़ के नीचे बैठा रहा.
अब पेड़ के नीचे दो भेड़िये बैठे थे.

बड़ा भेड़िया और नन्हा भेड़िया.

उन्होंने एक दूसरे से एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन वे बड़ी उत्सकता से एक दूसरे को तिरछी निग़ाहों से देखते रहे. परन्तु उनके दिमाग में एक-दूसरे के प्रति कोई भी शक और बैर नहीं था.

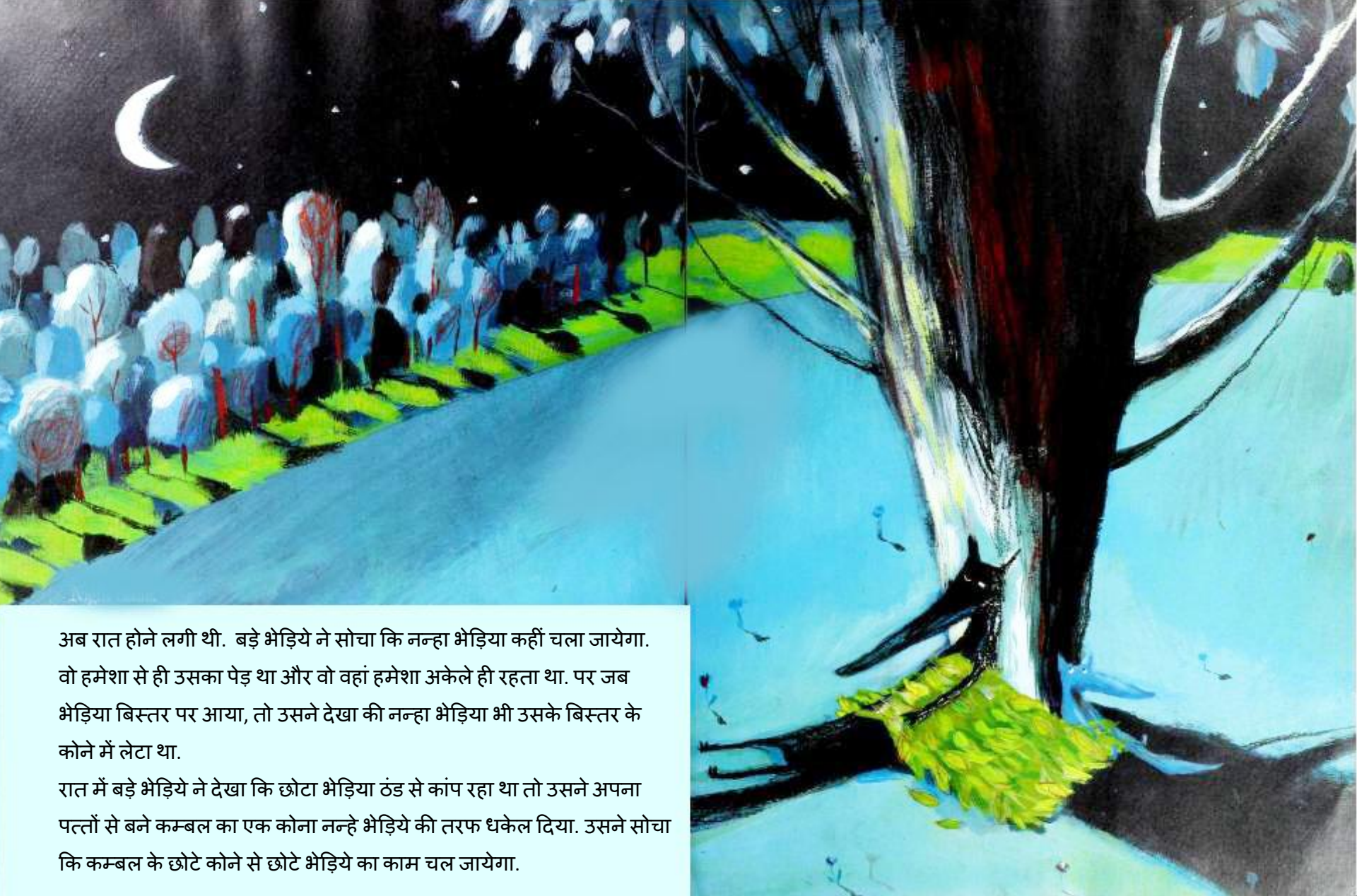

अब रात होने लगी थी. बड़े भेड़िये ने सोचा कि नन्हा भेड़िया कहीं चला जायेगा. वो हमेशा से ही उसका पेड़ था और वो वहां हमेशा अकेले ही रहता था. पर जब भेड़िया बिस्तर पर आया, तो उसने देखा की नन्हा भेड़िया भी उसके बिस्तर के कोने में लेटा था.

रात में बड़े भेड़िये ने देखा कि छोटा भेड़िया ठंड से कांप रहा था तो उसने अपना पत्तों से बने कम्बल का एक कोना नन्हे भेड़िये की तरफ धकेल दिया. उसने सोचा कि कम्बल के छोटे कोने से छोटे भेड़िये का काम चल जायेगा.

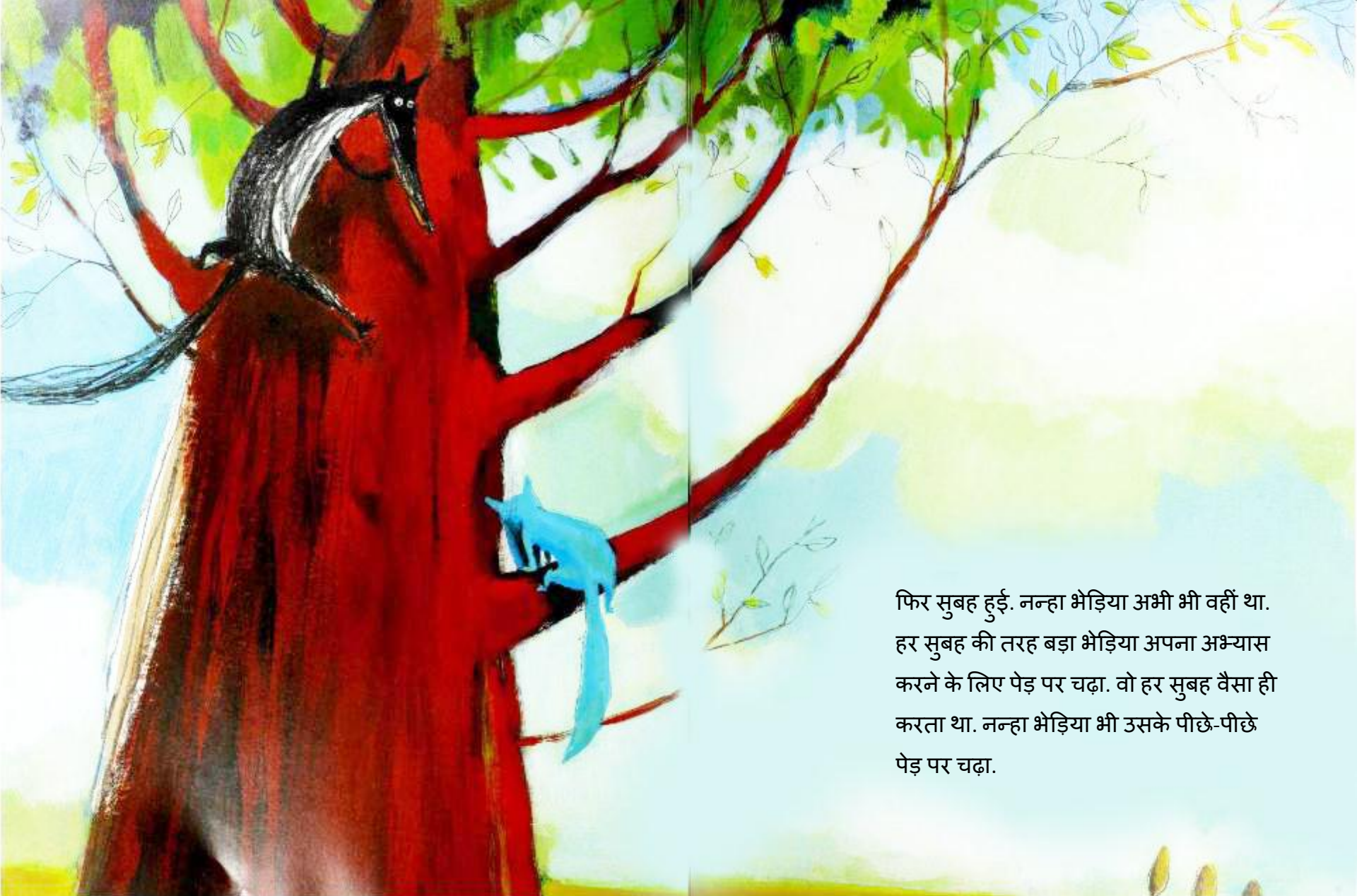

फिर सुबह हुई. नन्हा भेड़िया अभी भी वहीं था. हर सुबह की तरह बड़ा भेड़िया अपना अभ्यास करने के लिए पेड़ पर चढ़ा. वो हर सुबह वैसा ही करता था. नन्हा भेड़िया भी उसके पीछे-पीछे पेड़ पर चढ़ा.

बड़े भेड़िये ने छोटे भेड़िये को देखा. अचानक वो चिंतित हुआ. उसे लगा कि शायद नन्हा भेड़िया चढ़ने में उससे बेहतर हो? लेकिन नन्हें भेड़िये को पेड़ पर चढ़ने के लिए बार-बार प्रयास करना पड़ा. पहली बार तो वो जमींन के तल पर गिरा और फिर "आउच" कहकर दुबारा से चढ़ा.

बड़े भेड़िये ने माना की नन्हा भेड़िया बहादुर था और उसने उसको अपने साथ अभ्यास करने के लिए ऊपर चढ़ने दिया.

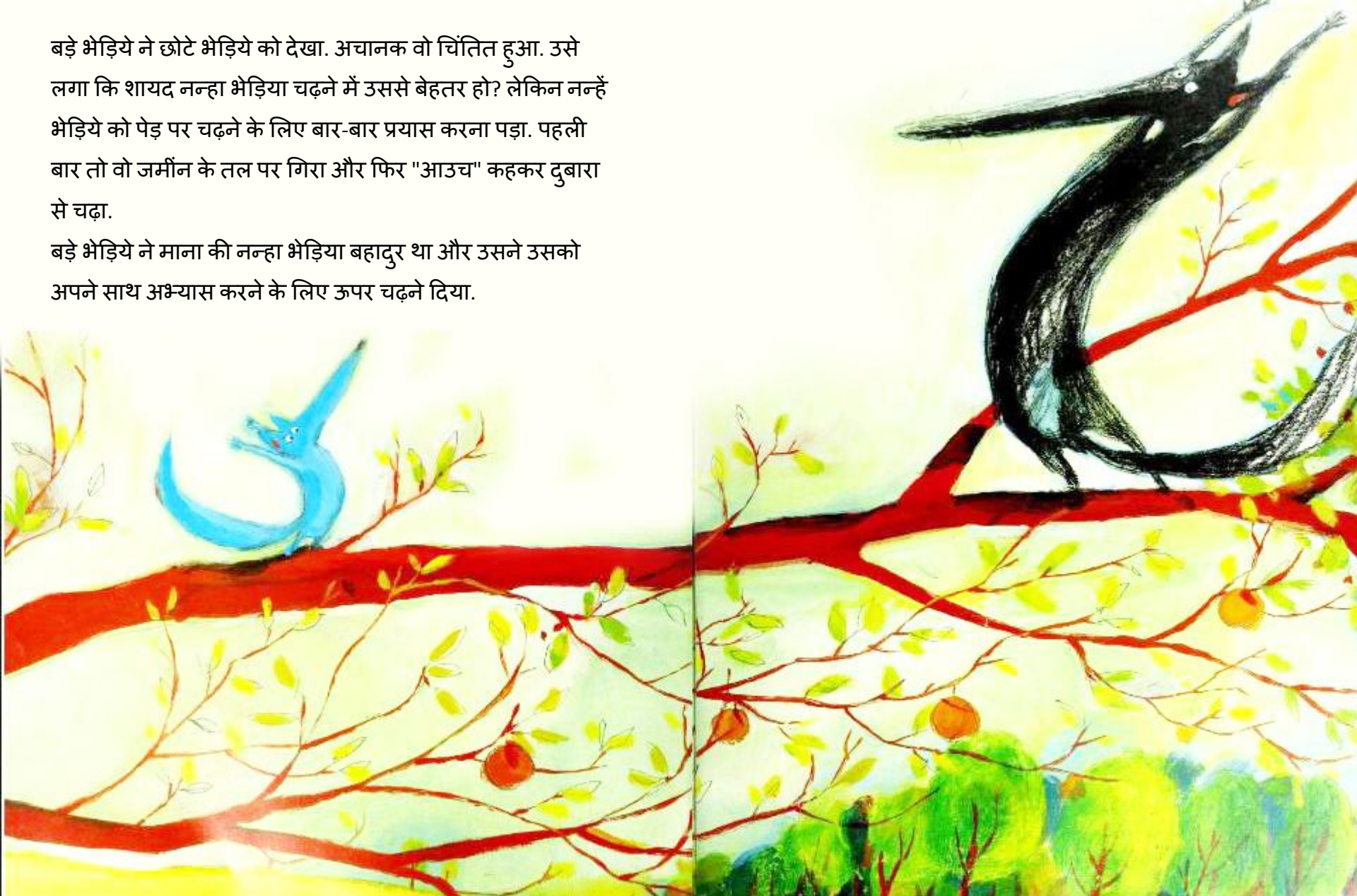

नीचे उतरने से पहले बड़े भेड़िये ने नाश्ते के लिए कुछ फल तोड़े. उसने सामान्य से कुछ अधिक फल तोड़े फिर उसने अपना भोजन तैयार किया. छोटा भेड़िया उसके पीछे-पीछे नीचे उतरा. उसने अपने लिए कुछ भी नहीं तोड़ा. बड़ा भेड़िया फल खाने लगा और उसने फल की एक प्लेट नन्हे भेड़िये की ओर धकेल दी. नन्हे भेड़िये ने उसे खाया.

खाना खाने के बाद बडा भेड़िया टहलने निकल पड़ा. जब वो पहाड़ी की तल तक पहुंचा तो उसने पलट कर देखा. नन्हा भेड़िया अभी भी पेड़ के नीचे था. वास्तव में नन्हा भेड़िया वहाँ से बहुत छोटा दिख रहा था.

बड़ा भेड़िया मुस्कुराया और पहाड़ी के नीचे गेहूं के बड़े खेत को पारकर आगे तरफ चल पड़ा.

थोड़ी दूर जाकर उसने फिर घूम कर देखा. नन्हा भेड़िया अभी भी पेड़ के नीचे था. बड़ा भेड़िया मुस्कुराया. नन्हा भेड़िया अब और भी छोटा लग रहा था. वह अब जंगल के किनारे पर पहुंच गया और अब पिछली बार की तरह उसने फिर एक बार मुड़कर देखा. नन्हा भेड़िया अभी भी पेड़ के नीचे था, लेकिन वह इतना छोटा था कि बड़ा भेड़िया बड़ी मुश्किल से ही उसे देख पा रहा था.

बड़े भेड़िये ने पिछली बार की तरह एक बार फिर मुस्कुराते हुए अपना चलना जारी रखा और जंगल में प्रवेश किया.

उस शाम जब बड़ा भेड़िया जंगल से बाहर आया तो उसे
अपने पेड़ के नीचे कुछ भी नहीं दिखा.
"शायद मैं बहुत दूर हूँ इसलिए मुझे कुछ नही दिख रहा है,"
मुस्कुराते हुए उसने खुद से कहा.

गेहूँ के बड़े खेत को पार करने के बाद वो पहाड़ी की तलहटी
में पहुँचा. फिर भी उसे पेड़ के नीचे कुछ भी नहीं दिखा.
"कितना अजीब है," उसने खुद से कहा, "सच में नन्हा
भेड़िया, उतना छोटा नहीं है."

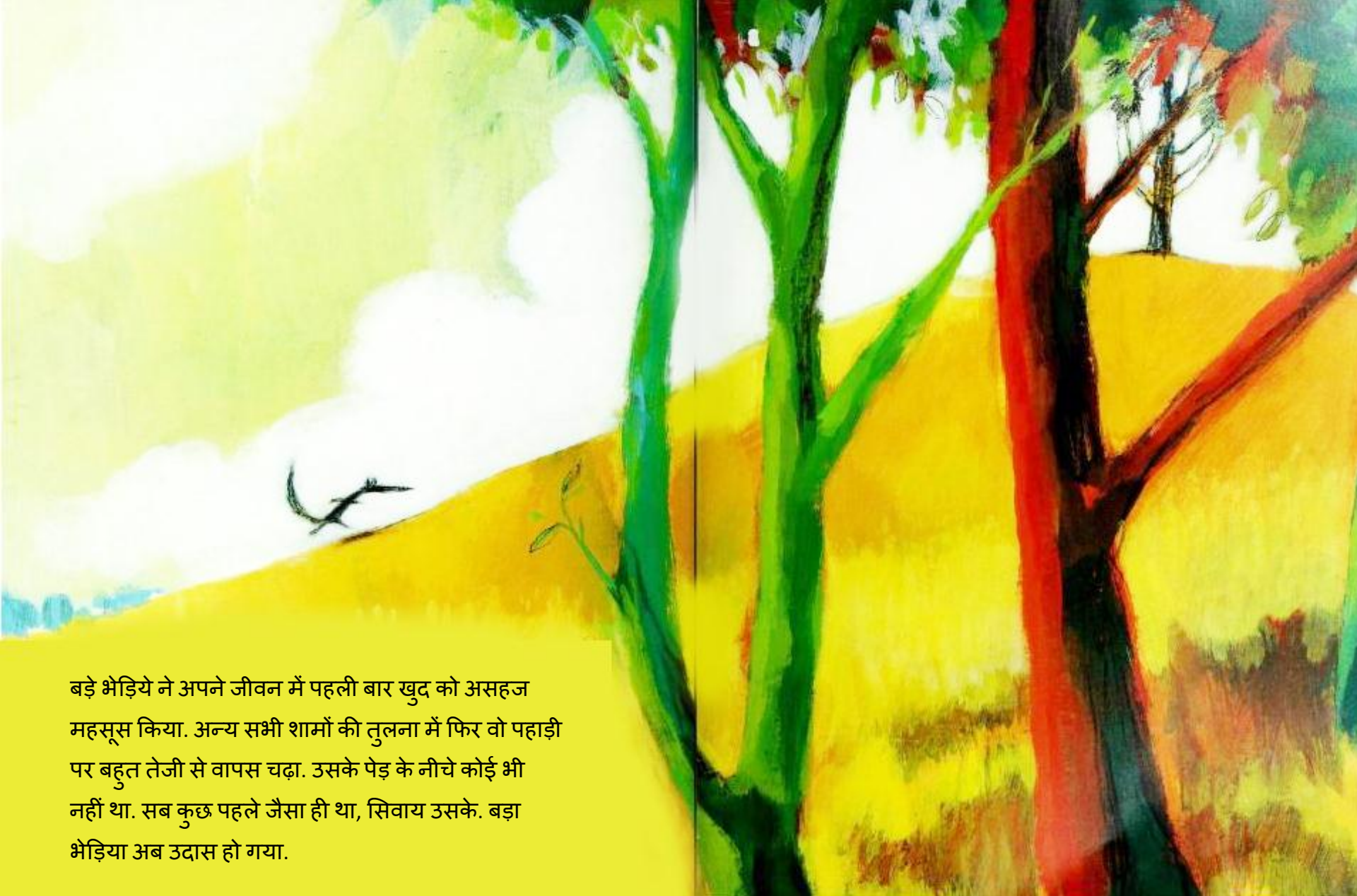

बड़े भेड़िये ने अपने जीवन में पहली बार खुद को असहज महसूस किया. अन्य सभी शामों की तुलना में फिर वो पहाड़ी पर बहुत तेजी से वापस चढ़ा. उसके पेड़ के नीचे कोई भी नहीं था. सब कुछ पहले जैसा ही था, सिवाय उसके. बड़ा भेड़िया अब उदास हो गया.

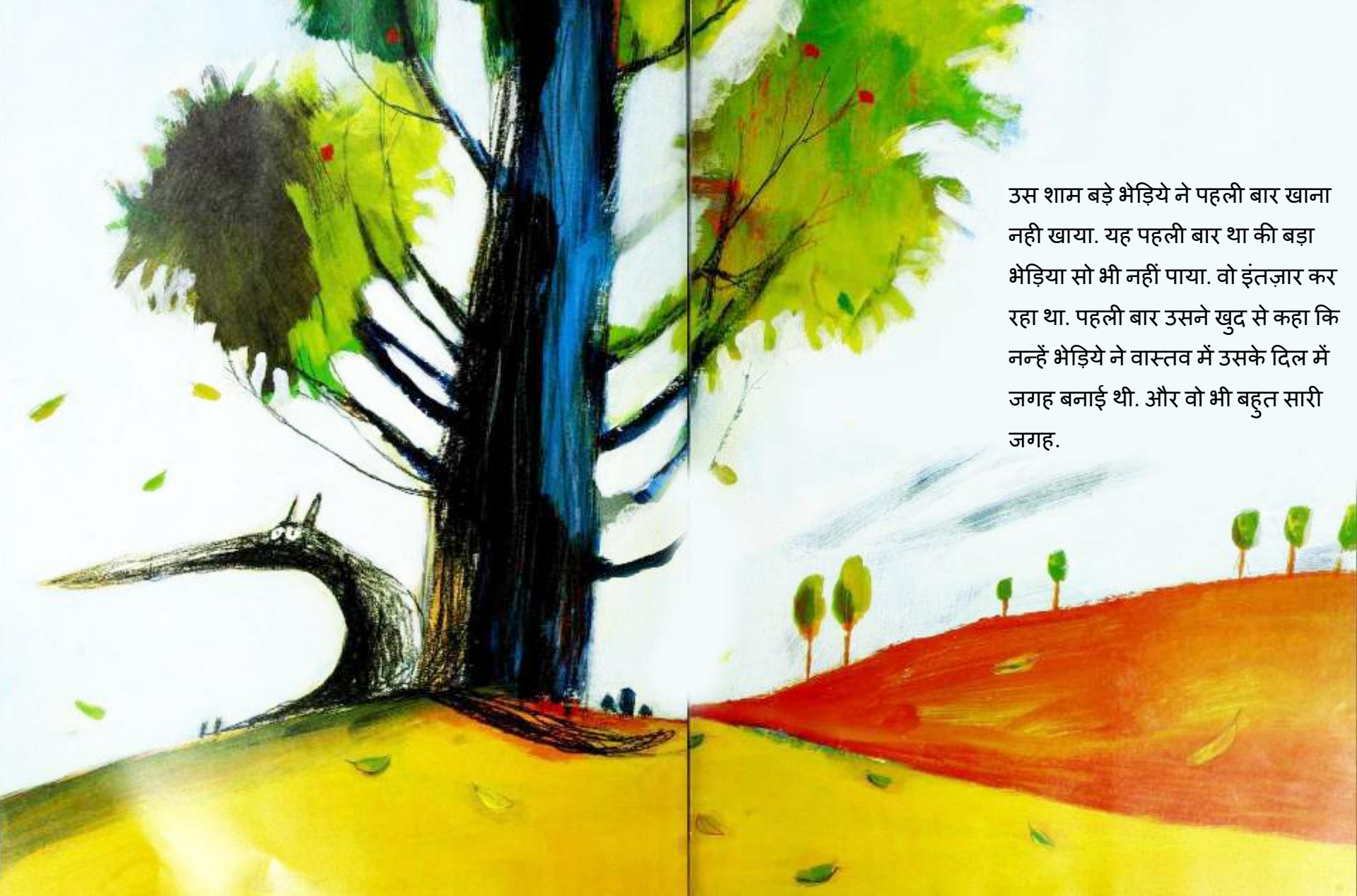

उस शाम बड़े भेड़िये ने पहली बार खाना नही खाया. यह पहली बार था की बड़ा भेड़िया सो भी नहीं पाया. वो इंतज़ार कर रहा था. पहली बार उसने खुद से कहा कि नन्हें भेड़िये ने वास्तव में उसके दिल में जगह बनाई थी. और वो भी बहुत सारी जगह.

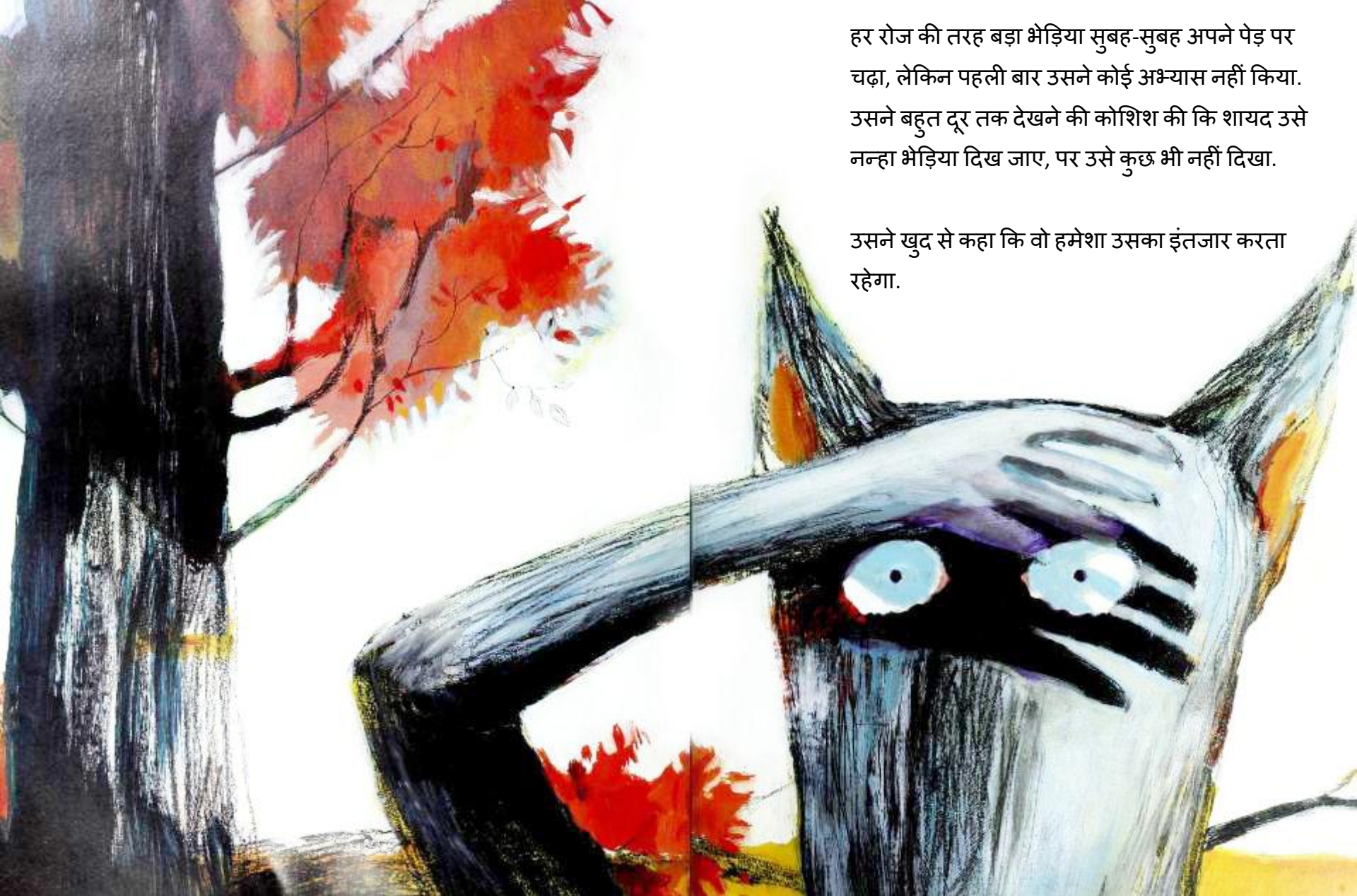

हर रोज की तरह बड़ा भेड़िया सुबह-सुबह अपने पेड़ पर चढ़ा, लेकिन पहली बार उसने कोई अभ्यास नहीं किया. उसने बहुत दूर तक देखने की कोशिश की कि शायद उसे नन्हा भेड़िया दिख जाए, पर उसे कुछ भी नहीं दिखा.

उसने खुद से कहा कि वो हमेशा उसका इंतजार करता रहेगा.

इंतजार करते हुए वह हर तरह की अजीब बातें सोचने लगा. उसने सोचा कि अगर नन्हा भेड़िया वापस लौटा तो इस बार वो उसे अपने पत्तों के कम्बल का एक बड़ा कोना देगा, पहले से भी बड़ा. और उसने खुद से वादा किया कि वो नन्हें भेड़िये को पेटभर खाने को देगा. उसने यह भी निर्णय लिया कि वो नन्हें भेड़िये को खुद से ऊंचा चढ़ने देगा और अपने सभी अभ्यास उसे सिखाएगा. फिर वो नन्हें भेड़िये को कभी वापिस जाने नहीं देगा. वो उसके बारे में और कई अन्य चीजों के बारे में लगातार सोचता रहा. साथ-साथ वो इंतजार भी करता रहा.

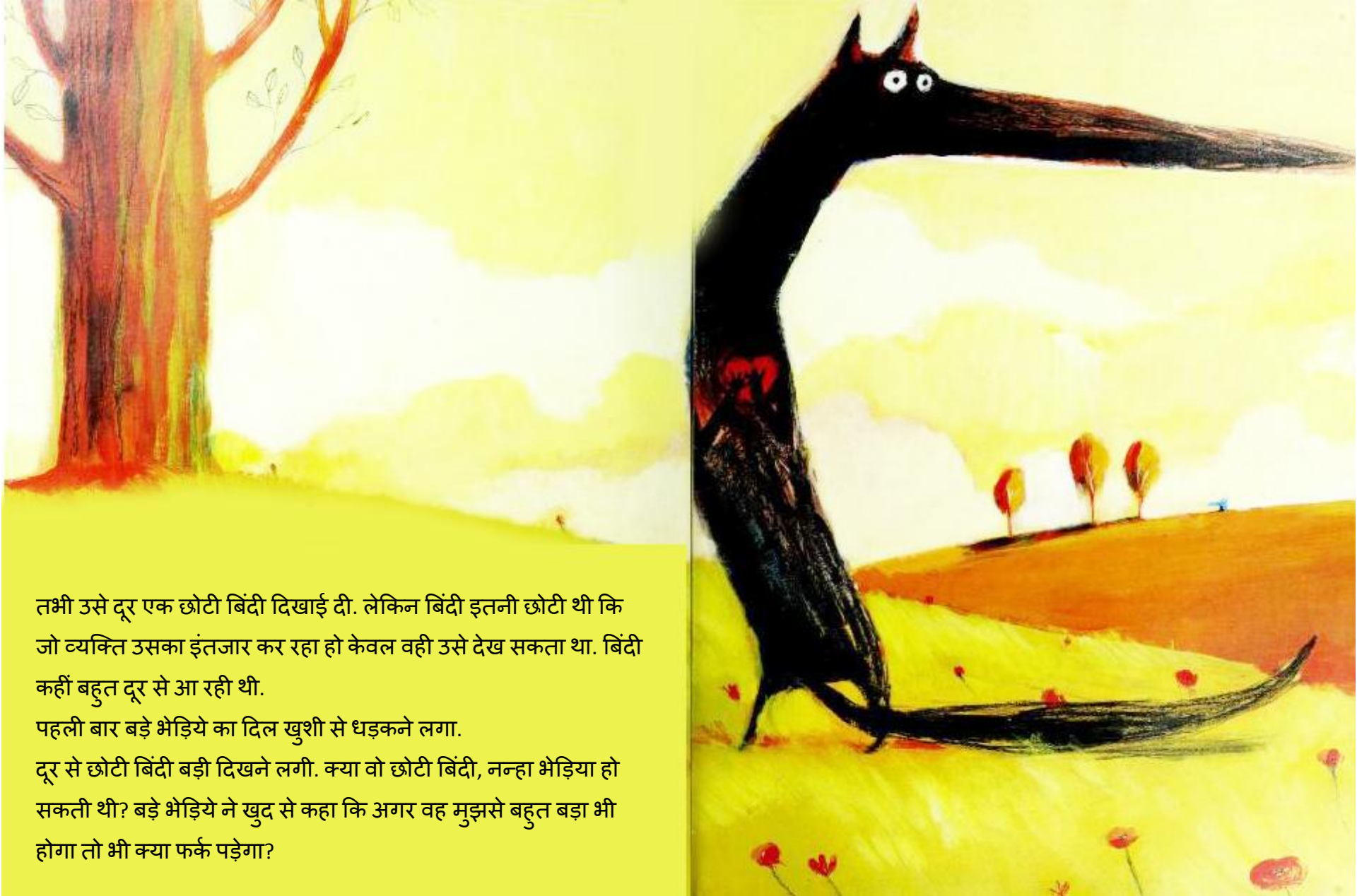

तभी उसे दूर एक छोटी बिंदी दिखाई दी. लेकिन बिंदी इतनी छोटी थी कि जो व्यक्ति उसका इंतजार कर रहा हो केवल वही उसे देख सकता था. बिंदी कहीं बहुत दूर से आ रही थी.

पहली बार बड़े भेड़िये का दिल खुशी से धड़कने लगा.

दूर से छोटी बिंदी बड़ी दिखने लगी. क्या वो छोटी बिंदी, नन्हा भेड़िया हो सकती थी? बड़े भेड़िये ने खुद से कहा कि अगर वह मुझसे बहुत बड़ा भी होगा तो भी क्या फर्क पड़ेगा?

लेकिन वो बड़ा नहीं था. वह अभी भी छोटा था.
वो निश्चित रूप से नन्हा भेड़िया ही था.

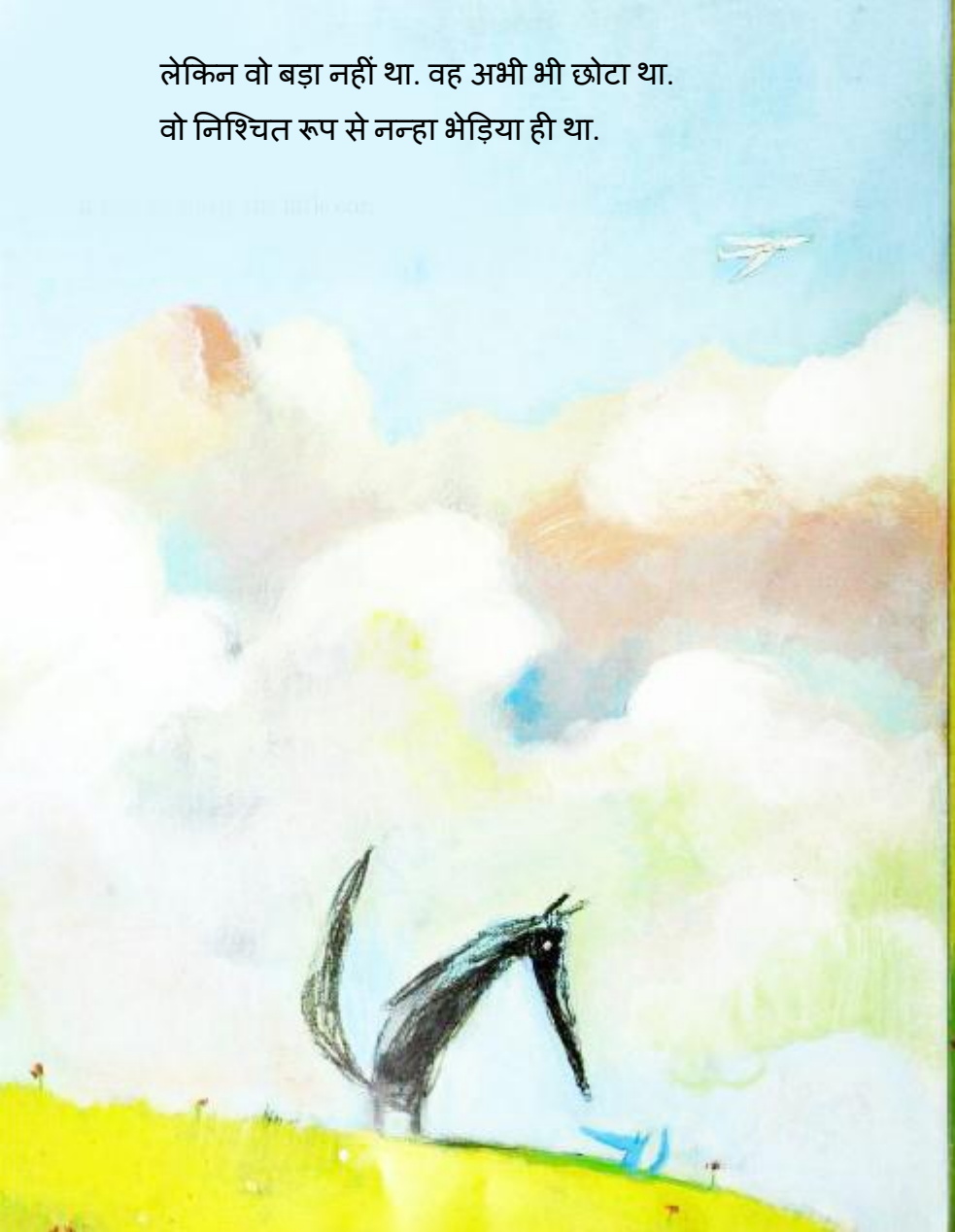

नन्हा भेड़िया पहाड़ी पर चढ़ कर आया और पेड़
के नीचे आकर बैठ गया.
"तुम कहाँ थे?" बड़े भेड़िये ने पूछा.
"वहां नीचे," नन्हें भेड़िये ने इशारे से बताया.
बहुत धीमीं आवाज में बड़े भेड़िये ने कहा,
"तुम्हारे बिना मुझे बहुत अकेला लगा."

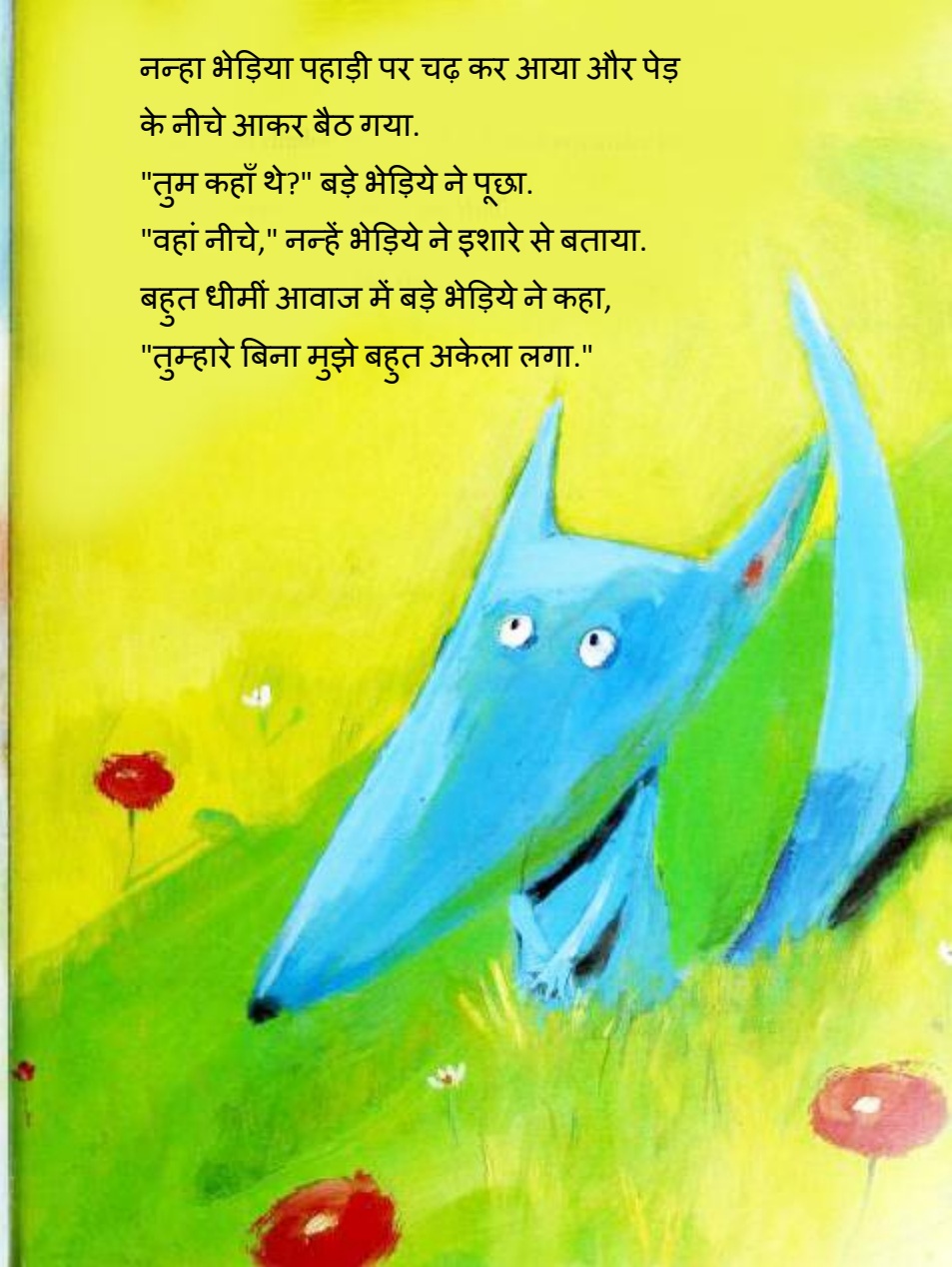

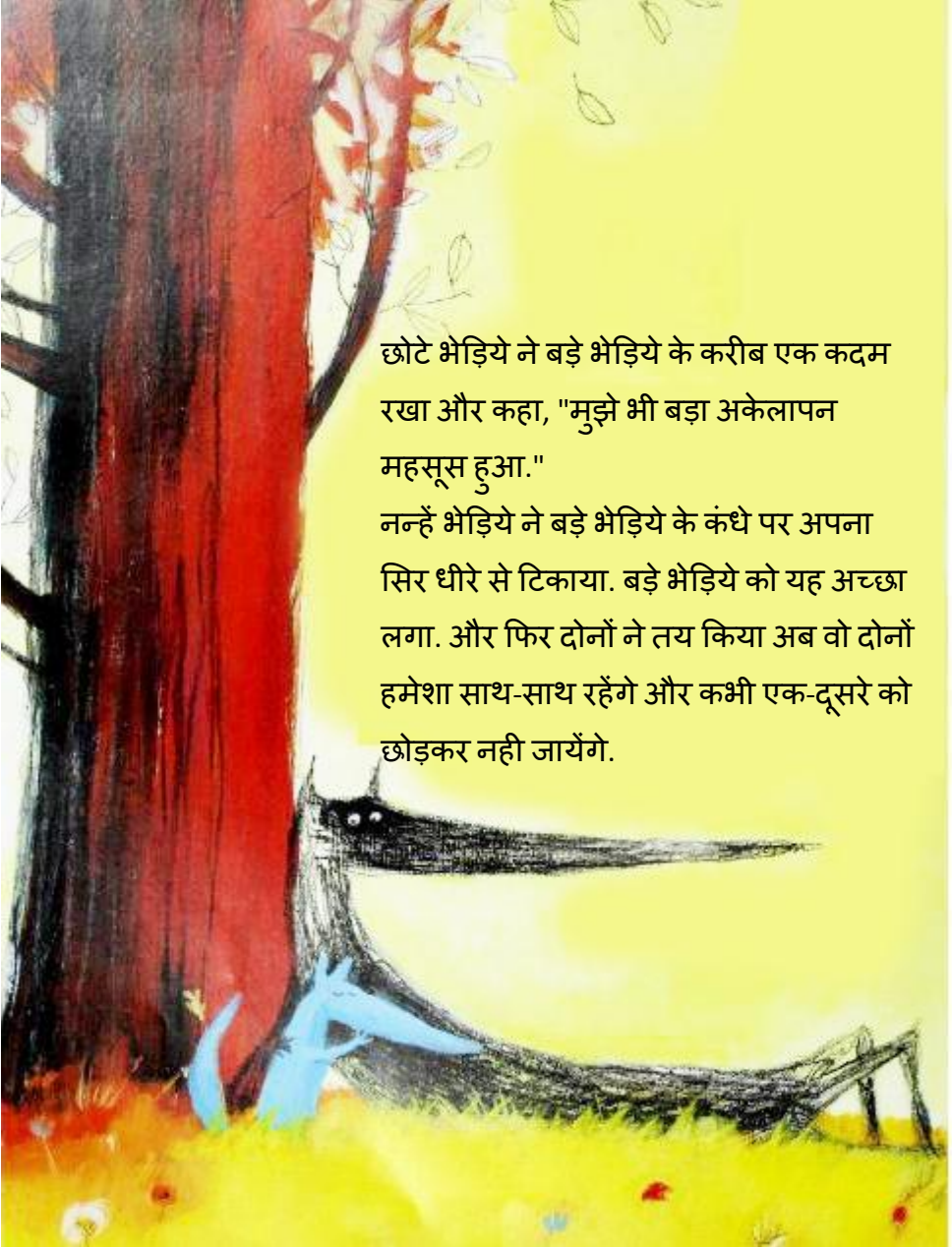

छोटे भेड़िये ने बड़े भेड़िये के करीब एक कदम रखा और कहा, "मुझे भी बड़ा अकेलापन महसूस हुआ."
नन्हें भेड़िये ने बड़े भेड़िये के कंधे पर अपना सिर धीरे से टिकाया. बड़े भेड़िये को यह अच्छा लगा. और फिर दोनों ने तय किया अब वो दोनों हमेशा साथ-साथ रहेंगे और कभी एक-दूसरे को छोड़कर नही जायेंगे.

समाप्त